राधा

मूल्य शिक्षा

Value education

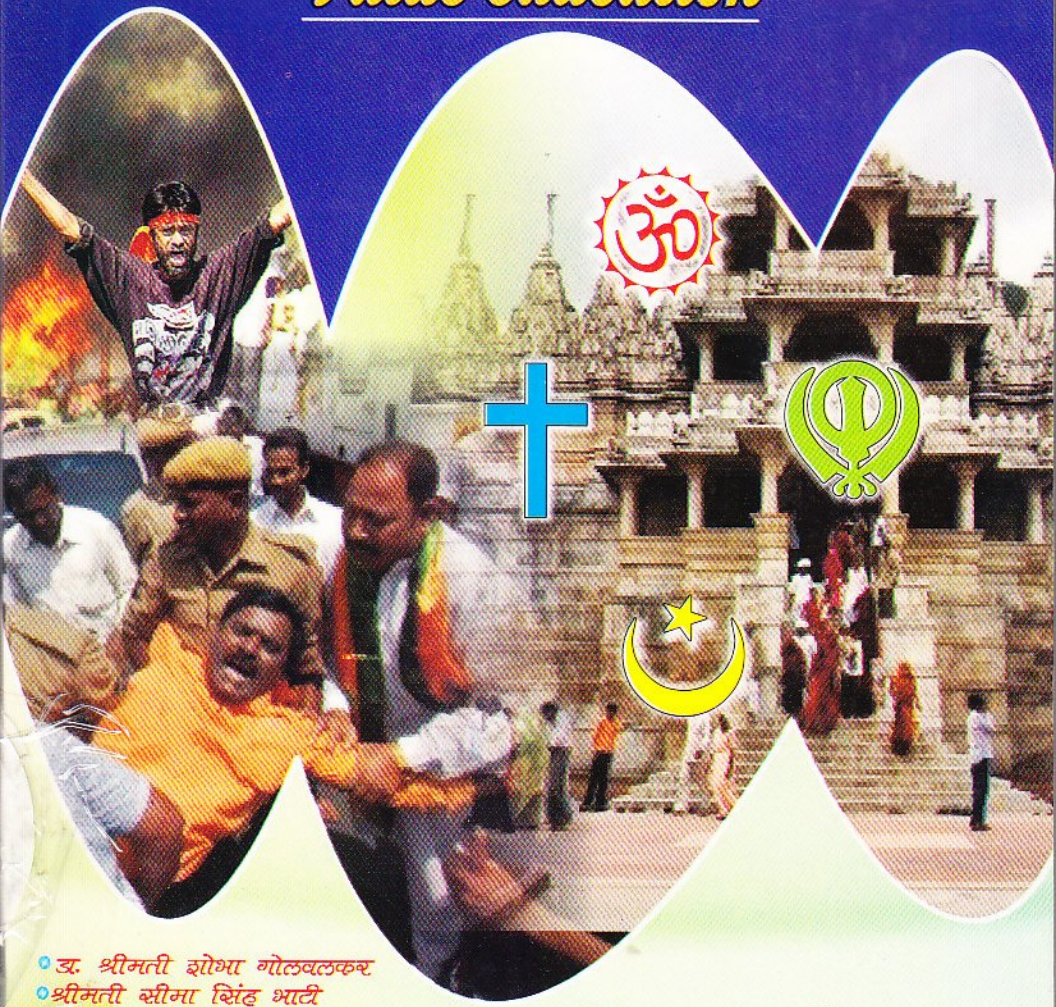

डा. श्रीमती शोभा गोलवलकर
श्रीमती सीमा सिंह भाटी

According to Curriculum of University Grant Commission

मूल्य शिक्षा

डॉ. (श्रीमती) शोभा गोलवलकर

सेवानिवृत प्राध्यापिका

विद्याभवन गो. से. शिक्षक महाविद्यालय उदयपुर (राज.)

वर्तमान में सलाहकार–शिक्षा संकाय

ऐश्वर्या शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय उदयपुर (राज.)

एवं

श्रीमती सीमा सिंह भाटी

मैनेजिंग डायरेक्टर

ऐश्वर्या शिक्षा संस्थान उदयपुर (राज.)

370
GOL

नवीन संस्करण

मूल्य : 95.00

AISHWARYA TEACHERS' TRAINING COLLEGE
ACC. No. 3297
DATE
B.Ed. LIBRARY
UDAIPUR

राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा. लि. आगरा–282002

फोन नं- 2276851, 6535342, फैक्स नं. (0562) 2275342

Website : www.radhaprakashanmandir.com

email : radhaprakashanmandir@yahoo.co.in

email: radhaprakashanmandir@Gmail.com

विषय-सूची

1. शैक्षणिक मूल्य 1—12
Educational Values
शैक्षणिक मूल्यों के उद्देश्य। शैक्षणिक मूल्यों के प्रकार—(अ) रुचियों से सम्बन्धित या तात्कालिक मूल्य। (ब) बौद्धिक रुचियों से सम्बन्धित या मध्यस्थ मूल्य। (स) शैक्षिक मूल्यों का स्तरीकरण। शिक्षा एवं मूल्य के प्रभावशाली पक्ष। मूल्यों के प्रकार। शिक्षा का आध्यात्मिक पक्ष एवं मूल्य। शिक्षा का मूल्य। वेदान्त और शिक्षा के मूल्य। वेदान्त के अनुसार शिक्षा के मूल्य।

2. मूल्य शिक्षा की आवश्यकता 13—24
Need of Value Education
आज मूल्य शिक्षा की आवश्यकता क्यों ? (1) नयी शताब्दी के आगमन हेतु मूल्य शिक्षा की आवश्यकता। (2) मूल्यों की रक्षा के लिये मूल्य शिक्षा आवश्यक है। (3) भविष्य के लिये तैयारी। (4) समाज में हर ओर अनैतिकता व्याप्त है, बच्चों को अनैतिक कार्यों का विरोध करने योग्य बनाने के लिये मूल्य शिक्षा की आवश्यकता। (5) भयमुक्त होकर मूल्य आधारित कर्म करने की प्रेरणा देने के लिये मूल्य शिक्षा की आवश्यकता। (6) जीवन शैली के उन्नयन के लिये मूल्य की शिक्षा। (7) आधुनिकता तथा पुरातनता में समन्वय। (8) अपने अस्तित्व को जानने और पहचानने के सामर्थ्य के विकास हेतु। (9) रोजगारपरक शिक्षा: मूल्य विहीनता का कलंक। (10) मूल्य आधारित राजनीति: समय की माँग। (11) मनुष्य में मानवता का विकास करने हेतु मूल्य शिक्षा। (12) सामाजिक पार्थक्य से मुक्ति। (13) भावी और वर्तमान नागरिकों को नागरिकता की मूल्य शिक्षा।

3. भारतीय शिक्षा और मानव-मूल्य 25—37
Indian Education and Human Values
कर्म सिद्धान्त की महत्ता। नारियों को श्रेष्ठ स्थान। संस्कारों को महत्त्व। साध्य को महत्त्व। भारतीय समाज के लिये ग्रहणीय आचरण और मूल्य।

4. जीवन मूल्यों के स्रोत एवं शिक्षाएँ 38—60
Source of Values and Educations
प्रस्तावना। पुनर्जन्म का सिद्धान्त। परलोकवाद। कर्मविपाक का सिद्धान्त। भाग्यवाद। आध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद। समन्वयवाद। सत्संगतिवाद। धर्मों की एकता। मानव में आस्था का संचार। राष्ट्रीय एकता। धार्मिक सहिष्णुता। ईसामसीह। पारसी और वैदिक धर्म। जैन और बौद्ध धर्म। यूनान और धर्म। इस्लाम और वैदिक धर्म। हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव की परम्परा। सिक्ख धर्म। मानववाद: मूल स्वर।

5. **प्रमुख जीवन मूल्य : सांस्कृतिक सन्दर्भ** 61—80
Important Life Values : Cultural References
जीवन मूल्य और संस्कृत का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध। संस्कृति व्यक्ति मूल्य। चालीस जीवन मूल्य।

6. **मूल्यों की शिक्षा और विद्यालयीकरण** 81—96
Values Education and Schoolisation
मूल्य शिक्षा क्या है ? मूल्यों का ह्रास। विद्यालयी कार्यक्रमों में मूल्य शिक्षा की व्याप्ति। विद्यालय की भूमिका। हमारे विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की उपेक्षा। विद्यालय में शिक्षा। शाला परिवेश एवं मूल्य। मूल्य शिक्षा: कतिपय निर्देशक नियम। मूल्यों की शिक्षा और विद्यार्थी का संज्ञानात्मक एवं सांवेगिक विकास।

7. **मूल्यों का मापन** 97—107
Measurement of Values
भूमिका। मूल्य मापन हेतु उपयोगी भारतीय उपकरण।

8. **शिक्षण सव्यूहनों द्वारा शैक्षिक मूल्यों का विकास** 108—131
Development of Values through Teaching Strategies
भूमिका। शिक्षा का स्वरूप। (1) न्यायिक शिक्षण प्रतिमान। उदाहरण पाठ। (2) भूमिका निर्वहन शिक्षण प्रतिमान। अनुरूपीकरण। (3) मूल्य स्पष्टीकरण विधि। (4) कहानी प्रस्तुतीकरण विधि। (5) मूल्य विश्लेषण शिक्षण प्रतिमान। (6) चर्चा। (7) योग। (8) जीवनी पठन। (9) समयावधि।

9. **मूल्यों के निर्धारक** 132—139
Determinants of Values
लैंगिक भेद। दबाव। नशीले पदार्थों का सेवन। आयु। बुद्धि। सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं वंचन। विद्यालय का वातावरण। पारिवारिक वातावरण। समाज।

10. **मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा** 140—153
Value Oriented Teacher Education
मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य। मूल्यपरक शिक्षा का अर्थ। मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता। मूल्यपरक शिक्षा कैसे दी जाय ? अध्यापक शिक्षा की वर्तमान स्थिति एवं मूल्य। नयी शिक्षा नीति एवं मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा। मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम। मूल्यपरक शिक्षण हेतु आवश्यक कौशल। मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा: एक कार्यशील मॉडल। मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा की आवश्यक बातें। मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षक का योगदान।

11. **शिक्षा के मूल्य एवं आकांक्षाएँ** 154—168
Values of Education and Aspiration
सामाजिक मूल्य क्या है ? मूल्यों का सामान्य वर्गीकरण। भारतीय समाजशास्त्री राधाकमल

मुखर्जी के विचार। मूल्यों का वर्गीकरण। मूल्यों के नियम। मूल्य और गैर-मूल्य। वर्तमान भारतीय समाज के मूल्य एवं आकांक्षाएँ। वर्तमान भारतीय समाज की आकांक्षाएँ।

12. जनसंचार के साधनों का मूल्य शिक्षा में योगदान 169—184
Contribution of Communication Instrument in Value Education

रेडियो प्रसारण। दूरदर्शन। दूरदर्शन की विकास यात्रा। दूरदर्शन के कार्य। दूरदर्शन की सीमाएँ। भारत में विद्यालयी दूरदर्शन का प्रारम्भ। कक्षा शिक्षण में दूरदर्शन का महत्त्व। प्रयोग विधि तथा सावधानियाँ। अध्यापकों को क्या करना चाहिये ? दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रम। सिनेमा। मूल्य शिक्षा में सिनेमा फिल्मों की उपयोगिता। सुझाव।

13. जनसंख्या शिक्षा और मूल्यों का विकास 185—197
Development of Values and Population Education

जनसंख्या शिक्षा की प्रकृति। जनसंख्या शिक्षा का सम्प्रत्यय। जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता। जनसंख्या शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा। जनसंख्या शिक्षा के अंग। जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्य। जनसंख्या शिक्षा तथा सामान्य शिक्षा में क्या सम्बन्ध है अथवा क्या विभेद है ? जनसंख्या शिक्षा का विषय-क्षेत्र। जनसंख्या शिक्षा की विषयवस्तु एवं मूल्यों की शिक्षा।

14. मूल्यों के विकास में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का महत्त्व 198—230
Importance of Co-curricular activities in Development of Values

पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का अर्थ। पाठ्य-सहगामी कार्यकलापों का लक्ष्य एवं महत्त्व। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन। वर्तमान स्थिति। सदन व्यवस्था। कतिपय पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ तथा मूल्यों का विकास। पर्वोत्सव—आयोजन द्वारा मूल्यों का विकास। शारीरिक प्रशिक्षण सम्बन्धी क्रियाएँ। स्काउटिंग। योग शिक्षा। शैक्षिक भ्रमण एवं मूल्यपरक शिक्षण। समाजोपयोगी उत्पादक कार्य। कला-शिक्षण एवं सौन्दर्यपरक मूल्य। यौन शिक्षा एवं नैतिक मूल्य।

15. मूल्यों के विकास में परिवार एवं समाज की भूमिका 231—239
Role of Family and Society in Development of Values

भूमिका। वर्तमान समाज में मूल्यहीनता की दशा। मूल्यों के विकास में परिवार का योगदान। परिवार किसे कहते हैं ? माता-पिता अपने व्यवहारों द्वारा बालकों में मूल्यों का विकास कैसे कर सकते हैं ? मूल्यों के विकास में समाज का योगदान अथवा भूमिका। समाज क्या है ? समाज ने व्यक्ति के विकास के लिये कौन-कौन सी व्यवस्थाएँ की हैं ? बच्चों में मूल्यों के विकास के लिये समाज को और कौन-कौन से कार्य करने चाहिये ?